



मधुबन ओम् शान्ति अंक 411 अक्टूबर 2026



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण परिवार प्रति मधुर यादपत्र 20-09-26
“परोपकार की भावना से सम्पन्न बन सभी पर उपकार करो”

प्राणेश्वर अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा अपनी शुभ भावना और सहयोग की कामना से सबको गुणवान बनाने वाली, सदा महादानी बन अपकारियों पर भी उपकार करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी बाबा के नूरे रत्न, ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - वर्तमान समय जैसे ब्राह्मण परिवार में चारों ओर बहुत अच्छी तपस्या की लहर चल रही है। सभी सेवा और स्व-उन्नति का ध्यान रख, प्लेन बुद्धि बन हर प्लेन को साकार रूप दे रहे हैं। अभी प्यारे बापदादा की राय वा आज्ञा प्रमाण हम सबको मन्सा-वाचा और कर्मणा तीनों में पावरफुल, नॉलेजफुल और लवफुल बन बेहद की सेवायें करनी हैं। अब हम सभी के दिल में यही शुभ भावना है कि जल्दी से जल्दी हमारा प्यारा बाबा विश्व के कोने-कोने में प्रत्यक्ष हो जाए क्योंकि दिनप्रतिदिन चारों ओर दुःख अशान्ति बढ़ती जा रही है। विश्व में एक तरफ प्रकृति अपना तमोगुण रूप दिखा रही है। अचानक ऐसे-ऐसे समाचार सुनने को मिल रहे हैं कि कुछ ही मिनटों में ऐसी बाढ़ आई जो अनेकों को बहाकर ले गई, कितने लोग बेघर हो गये। प्रकृति तो अपना जलवा दिखा ही रही है लेकिन दूसरी ओर अनेक प्रकार के पुराने हिसाब-किताब अचानक बाहर आते और आत्मायें तनावग्रस्त हो दुःख अशान्ति का अनुभव करती हैं। तीसरी ओर फिर विनाशकारी आत्मायें भी अपना कार्य तीव्रगति से करने में लगी हुई हैं। ऐसे समय पर हम स्थापना के निमित्त बनी हुई परोपकारी आत्माओं को, अपनी श्रेष्ठ मन्सा द्वारा सर्व को सकाश दे, आने वाली नई स्वर्णिम दुनिया की खुशखबरी सुनानी है। सदा पर-उपकार की, दातापन की भावना से सम्पन्न बनना है। कोई कैसी भी आत्मा सम्पर्क में आये, सभी के प्रति शुभ चिन्तक अर्थात् अपकारी के ऊपर भी उपकार की भावना रखनी है। कभी किसी के प्रति घृणा दृष्टि न हो। जैसे बाप को किसी भी बच्चे प्रति घृणा नहीं आती, सदैव शुभ चिन्तक हैं, ऐसे फालो फादर।

बापदादा अभी ऐसा परोपकारी बच्चों का गुप देखना चाहते हैं, जो अपने समय को, सुखों को, नाम, शान, मान और सर्व प्राप्ति की इच्छाओं को कुर्बान कर, लेने की इच्छा को छोड़ देने वाले महादानी हों। स्वयं सदा सन्तुष्ट रह सर्व को सन्तुष्ट करने वाले सन्तुष्टमणी के समान सम्पन्न हो। जो अपने उपकार की शुभ भावना से, स्नेह से, शक्ति से, मीठे बोल से, उत्साह-उमंग के सहयोग से दिलशिकस्त को शक्तिवान बना दे। हर परिस्थिति में, हर कार्य में, हर सहयोगी संगठन में निःस्वार्थपन हो, ऐसे परोपकारी बच्चों का गुप चाहिए। तो बोलो, मीठे बापदादा की ऐसी शुभ आशायें पूरी करेंगे ना!

अभी तो मधुबन में अव्यक्ति मिलन की अलौकिक रिमझिम लगने वाली है।

आप सब अपने-अपने टर्न अनुसार मधुबन आने का प्रोग्राम बना रहे होंगे।

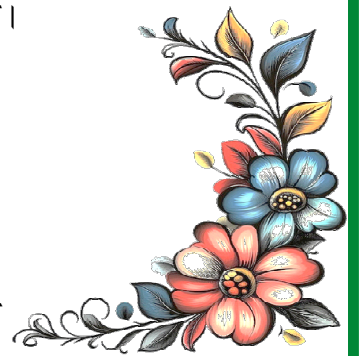
आप सभी का बाबा के घर में हार्दिक स्वागत है।

अच्छा - सबको याद ...

ईश्वरीय सेवा में,

बी के मोहिनी

मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़





ये अव्यक्त इशारे



परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

1) परोपकार की भावना से सम्पन्न बनने के लिए हर आत्मा के गुणों को ही देखो। किसी की कमजोरी वा अवगुण को देखते भी अपनी शुभ भावना से, सहयोग की कामना से उस आत्मा को भी गुणवान बनाने की शक्ति का दान दो। अपने समय को, सुखों को, नाम, शान, मान सर्व प्राप्ति की इच्छा को कुर्बान कर, लेने की इच्छा को छोड़ देने वाले महादानी बनो तब कहेंगे परोपकार की भावना से सम्पन्न।

2) स्वयं के सर्व खजानों को अन्य आत्माओं प्रति दान देना - यही है परोपकार करना। ऐसे परोपकारी स्वयं को सर्व खजानों से सम्पन्न बेगमपुर का बादशाह अनुभव करेंगे। उनके संकल्प में भी गम के संस्कार इमर्ज नहीं हो सकते। जहाँ सर्विस है, वहाँ किसी के कमजोर संस्कारों को न देख, उनके प्रति रहमदिल की दृष्टि रख, अपकारियों पर भी उपकार करो।

3) विशेष रूप से अपनी मन्सा अर्थात् संकल्प शक्ति द्वारा, वाणी की शक्ति द्वारा, अपने संग के रंग द्वारा, सम्बन्ध के स्नेह द्वारा, खुशी के अखुट खजाने द्वारा अखण्ड दान करते रहना - यही है परोपकार करना। कोई भी आत्मा सम्पर्क में आये तो खुशी के खजाने से सम्पन्न होकर जाए, ऐसे अखण्ड दानी बनो।

4) किसी भी आत्मा से कुछ ले करके देने की इच्छा न हो, संकल्प में भी यह न आये कि यह करे तो मैं करूँ, यह बदले तो मैं बदलूँ, कुछ वह बदले, कुछ मैं बदलूँ.... भिखारी को भी मालामाल बनाने वाला - अपकारी के ऊपर उपकार करने वाला ही परोपकार की भावना से सम्पन्न है।

5) वह त्रिकालदर्शी होने के कारण आत्मा के सम्पूर्ण सहयोग को सामने रखते हुए, हर आत्मा की कमजोरी को परखते हुए उसकी कमजोरी को स्वयं में धारण नहीं करेगा, वर्णन नहीं करेगा लेकिन अन्य आत्माओं की कमजोरी का काँटा कल्याणकारी स्वरूप से समाप्त कर देगा। काँटे के बजाए - काँटे को भी फूल बना देगा।

6) जो परोपकार की भावना से सम्पन्न है, वह सदा सन्तुष्टमणी के समान स्वयं भी सन्तुष्ट होगा और सर्व को भी सन्तुष्ट करने वाला होगा। कमाल यह है जो होपलेस में होप पैदा कर देगा, जिसके प्रति सब निराशा दिखायें, ऐसे व्यक्ति वा ऐसी स्थिति में सदा के लिए उनकी आशा के दीपक जगा देगा। अपने उपकार की शुभ भावना से, स्नेह से, शक्ति से, मीठे बोल से, उत्साह-उमंग के सहयोग से दिलशिकस्त को शक्तिवान बना देगा अर्थात् भिखारी को बादशाह बना देगा।

7) अगर कोई आपके सहयोगी भाई व बहन, परिवार की आत्मायें, बेसमझी वा बालहठ से अल्पकाल की वस्तु को सदाकाल की प्राप्ति समझ, अल्पकाल का मान-शान-नाम वा अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा रखती हैं तो दूसरे को मान देकर के स्वयं निर्मान बनना यही परोपकार है। यह देना ही सदा के लिए लेना है।

8) इस समय ऐसा परोपकारी गुप चाहिए जो देने वाला दाता हो। जैसे सम्पन्न राजायें सदा प्रजा को देने वाले होते हैं। सम्पन्न राजाओं का हाथ कभी भी लेने वाला नहीं होगा, देने वाला होगा। आप बच्चे तो स्वर्ग के विश्व महाराजा बन दाता रूप का पार्ट बजाने वाले हो तो अभी से वही संस्कार स्वयं में भरो।

9) जो स्वयं के प्रति इच्छा मात्रम् अविद्या है, अखण्ड दानी है, वही परोपकारी है। जैसे बाप ने स्वयं का समय भी सेवा में दिया। स्वयं निर्मान बन बच्चों को मान दिया। पहले बच्चे - नाम बच्चे का काम अपना। काम के नाम की प्राप्ति का भी त्याग किया। नाम में भी परोकारी बने। ऐसे फालो फादर करो।

10) ब्रह्मा बाप ने बच्चों को मालिक बनाया और स्वयं को सेवाधारी के रूप में रखा। मालिक-पन का मान भी दिया, शान भी दिया, नाम भी दिया। कभी अपना नाम नहीं किया - मेरे बच्चे। तो जैसे बाप ने नाम, मान, शान सबका त्याग किया, परोपकार किया, स्वयं का सुख बच्चों के सुख में

समझा। बच्चों की विस्मृति के कारण दुःख का अनुभव सो अपना दुःख समझा। ऐसे फालो फादर कर परोपकार की भावना से सम्पन्न बनो तब विश्व कल्याण का कार्य सम्पन्न होगा।

11) अपकारी पर भी उपकार करना, यही ज्ञानी तू आत्मा का कर्तव्य है। जैसे बाप ने ग्लानि को भी कल्याणकारी दृष्टि से देखा। उपकारी पर उपकार तो दुनिया वाले भी करते हैं, भक्त आत्मायें भी करते हैं लेकिन ज्ञानी तू आत्मा का अर्थ है सर्व के प्रति कल्याण की भावना, अकल्याण संकल्प मात्र भी नहीं हो। अपकारियों पर भी उपकार करे तब कहेंगे विश्व कल्याणकारी।

12) वर्तमान समय अनेक आत्माओं में स्व-उपकार करने की इच्छा है लेकिन हिम्मत और शक्ति नहीं है। ऐसी निर्बल आत्माओं का उपकार करने वाले आप पर-उपकारी बच्चे निमित्त हो। तो उपकार सच्चे दिल से होता है। विश्व राज्य अधिकारी बनना है तो स्व-उपकारी के साथ, पर-उपकारी बनो।

13) बापदादा सदा श्रीमत देते हैं कि मन में हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखो - अपकारी पर भी उपकार की वृत्ति रखो, संकल्प सदा सर्व के प्रति श्रेष्ठ हो, निःस्वार्थ हो, सदा दातापन की भावना हो। सदा स्व परिवर्तन अथवा स्व के श्रेष्ठ कर्मों द्वारा औरों को श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा देने वाले कर्म हों, तब कहेंगे परोपकारी।

14) हर आत्मा के प्रति रहम की भावना, सदा सहयोग की भावना, हिम्मत बढ़ाने की भावना हो। हर परिस्थिति में, हर कार्य में, हर सहयोगी संगठन में निःस्वार्थ पन हो, तब कहेंगे पर उपकार की भावना। जैसे ब्रह्मा बाप ने स्व के प्रति कुछ भी स्वीकार नहीं किया। न महिमा स्वीकार की, न वस्तु स्वीकार की, न रहने का स्थान स्वीकार किया। स्थूल और सूक्ष्म सदा “पहले बच्चे” - इसको कहते हैं पर-उपकारी। इसमें फालो फादर कर समान बनो।

15) ज्ञानी तू आत्मा सदैव हर एक के प्रति मास्टर स्नेह का सागर होते हैं। बिना स्नेह के उसके पास और कुछ है ही नहीं। कोई भी आयेगा तो उसे स्नेह ही देंगे। आजकल सम्पत्ति से भी ज्यादा स्नेह की आवश्यकता है। स्नेह की शक्ति से दुश्मन को भी मित्र बना सकते हो। अपकारियों पर भी उपकार कर सकते हो।

16) मन्सा सेवा करने के लिए सर्व के प्रति सदा ही श्रेष्ठ और निःस्वार्थ संकल्प हों, सदा पर-उपकार की भावना हो। अपकारी पर भी उपकार की श्रेष्ठ शक्ति हो। सदा दातापन की भावना हो। सदा स्व परिवर्तन, स्व के श्रेष्ठ कर्म द्वारा औरों को श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा देने वाले हो।

17) कोई कैसी भी आत्मा सम्पर्क में आये - चाहे सतोगुणी, चाहे तमोगुणी सभी के प्रति शुभ चिन्तक अर्थात् अपकारी के ऊपर भी उपकार करने वाले। कभी किसी आत्मा के प्रति घृणा दृष्टि नहीं क्योंकि जानते हैं कि यह अज्ञान के वशीभूत है अर्थात् बेसमझ बच्चा है। बेसमझ बच्चे के कोई भी कर्म पर घृणा नहीं होती है और ही बच्चे के ऊपर रहम वा स्नेह आयेगा।

18) जैसे बापदादा सदा बच्चों के साथ हर कदम में सहयोगी हैं और अन्त तक रहेंगे। बाप को किसी के प्रति घृणा नहीं होती। सदैव अपकारी के भी शुभ चिन्तक हैं, ऐसे फालो फादर। हर आत्मा के प्रति सदा शुभ भाव और भावना रखो। इसने ऐसा क्यों किया, यह सोचने के बजाए इस आत्मा का कल्याण कैसे हो - यह सोचो तब कहेंगे शुभचिन्तक वा विश्व कल्याणकारी आत्मा।

19) कोई गाली भी दे, झूठा इल्जाम भी लगाये, लेकिन आपको क्रोध न आये। अपकारी के ऊपर उपकार करना, यही आप ब्राह्मणों का कर्म है। वह गाली दे आप गले लगाओ, यही है कमाल। इसको कहा जाता है परिवर्तन। गले लगाने वाले को गले लगाना, यह कोई बड़ी बात नहीं लेकिन निन्दा करने वाले को सच्चा मित्र मन से मानो, तब कहेंगे उपकार करने वाले।

20) कल्याणकारी भावना वा वृत्ति रखकर कोई भी आत्मा की पालना करो तो कैसी भी अपकारी आत्मा को अपनी पालना से उपकारी बना सकते हो। कैसी भी पतित आत्मा, पतित-पावन की वृत्ति से पावन हो सकती है। जैसे माँ बच्चे की कमजोरियों वा कमियों को नहीं देखती है। उनको ठीक करने का ही रहता है। तो यह पालना करने का कर्तव्य इस रूप में स्थित रहने से यथार्थ चल सकता है।

21) सन्तुष्ट को सन्तुष्ट रखना, स्नेही को स्नेह देना, सहयोगी के साथ सहयोगी बनना - यह महावीरता नहीं है। लेकिन कोई कितना भी असहयोगी बने, अपने सहयोग की शक्ति से असहयोगी को सहयोगी बनाना इसको महावीरता कहा

जाता है। कमजोर को कमजोर समझ छोड़ न दो। लेकिन उसको बल देकर बलवान बनाओ, कमजोर को हाईजम्प देने योग्य बनाओ तब कहेंगे महावीर अथवा सब पर उपकार करने वाले।

22) जिसका आपके प्रति शुभ भाव है उसके प्रति आप भी शुभ भाव रखते हो, उपकारी पर उपकार करते हो, यह कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन कोई आपको बार-बार गिराने की कोशिश करे, आपके मन को डगमग करे, फिर भी आपको उसके प्रति सदा शुभचिंतक का, अचल-अटल भाव हो, बात के कारण भाव न बदले, कोई अपकार करे, आप एक सेकेण्ड में अपकार को उपकार में परिवर्तित कर दो तब कहेंगे कमाल।

23) कोई अपने संस्कार वा स्वभाव के कारण आपके सामने परीक्षा के रूप में आये लेकिन आप सेकेण्ड में अपने श्रेष्ठ संस्कार से, एक की स्मृति से ऐसी आत्मा के प्रति भी रहमदिल का संस्कार वा स्वभाव धारण कर लो - यही है उपकार करना।

24) कोई देहधारी दृष्टि से आपके सामने आये तो आप एक सेकेण्ड में उनकी दृष्टि को आत्मिक दृष्टि में परिवर्तित कर लो। कोई गिराने की वृत्ति से वा अपने संगदोष में लाने की दृष्टि से सामने आये तो आप उनको सदा श्रेष्ठ संग के आधार से, संगदोष से निकाल श्रेष्ठ संग लगाने वाले बना दो। ऐसी परिवर्तन करने की युक्ति आने से कभी भी विघ्न से हार नहीं खायेंगे। सम्पर्क में आने वाले आपकी इस सूक्ष्म श्रेष्ठ सेवा पर बलिहार जायेंगे।

25) कोई रोज आपकी ग्लानि करे, वो सदा अकल्याण करे, आप उससे किनारा करने के बजाए उसका भी कल्याण करते रहो, यही आप ज्ञानी तू आत्मा का कर्तव्य है। जैसे बाप की महिमा में विशेष रहमदिल का गुण गाया जाता है। चाहे देश में, चाहे विदेश में बाप के आगे जायेंगे तो रहमदिल, मर्सीफुल कहेंगे। तो आप सभी भी मास्टर रहमदिल हो। ऐसे रहमदिल बन सब पर उपकार करो।

26) अति पाप आत्मा, अति अपकारी आत्मा, बगुले के ऊपर भी नफरत नहीं, घृणा नहीं, निरादर नहीं लेकिन विश्व-कल्याणकारी स्थिति में स्थित हो रहमदिल बन तरस की भावना रखते हुए सेवा का सम्बन्ध समझकर सेवा करो, जितने होपलेस केस की सेवा करेंगे उतने ही प्राइज़ के

अधिकारी बनेंगे और नामीग्रामी विश्व-कल्याणकारी गाये जायेंगे। पीसमेकर की प्राइज़ लेंगे।

27) योगी जीवन की ऊंची मंजिल को प्राप्त करने वाली आत्मा निंदा को स्तुति में, ग्लानि को गायन में, ठुकराने को सत्कार में, अपमान को स्व-अभिमान में, अपकार को उपकार में परिवर्तित कर बाप समान सदा विजयी, अष्ट रत्न और भक्तों के इष्ट बनो। यह भावना नहीं रखो कि यह भी तो कुछ बदले, तो मैं बदलूँ, यह लेने की भावना है। मुझे बायब्रेशन देना है। मुझे रहमदिल बनना है। मुझे गुणों का, शक्तियों का सहयोग देना है, इसमें मास्टर दाता, फ्राकदिल बनो।

28) बापदादा सदा श्रीमत देते हैं कि मन में हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखो, अपकारी पर भी उपकार की वृत्ति रखो - यह है स्वच्छ मन। स्वयं के प्रति वा अन्य के प्रति व्यर्थ संकल्प आता है तो यह स्वच्छ मन नहीं है। स्वच्छ मन, क्लीन और क्लीयर बुद्धि हो तब डबल लाइट स्थिति बन सकेगी। बाप समान स्थिति बनाने का यही सहज साधन है।

29) कोई भी बात फील करना फेल की निशानी है। कितना भी कोई अपकारी हो लेकिन आपकी दृष्टि और वृत्ति उपकारी हो। जितना अधिकारी उतना निरहंकारी। ज्ञान में चलने के बाद जो स्व अभिमान आ जाता है, उसका भी त्याग। जब इतनी त्याग की वृत्ति और दृष्टि हो तब स्मृति में बापदादा रहेगा और मुख पर भी यही बोल रहेंगे।

30) अपने तीन स्वरूप सदा स्मृति में रखो: एक उपकारी हूँ, दूसरा निरहंकारी और तीसरा अधिकारी हूँ। कितना भी कोई अपकारी हो लेकिन आपकी दृष्टि और वृत्ति उपकारी हो, फिर जितना अधिकारी उतना निरहंकारी। जब वृत्ति से भी मैं-पन का त्याग होगा, स्मृति में सदैव बाप और दादा रहेगा और मुख पर भी यही बोल रहेंगे तब विश्वपति बन विश्व की सर्विस कर सकेंगे।

31) जैसे होम्योपैथिक दवाई की छोटी-छोटी गोलियां कितने बड़े रोग को खत्म कर देती हैं, ऐसे आप मास्टर सर्वशक्तिमान् अपनी वृत्ति और दृष्टि से किसके भी कड़े संस्कार के रोग को खत्म कर सकते हो। जैसे वह दवाई यह नहीं कहती कि रोग को कैसे मिटाये, ऐसे आप परोपकारी आत्मायें मास्टर ज्ञान सूर्य बन सर्व आत्माओं के पतित संकल्पों वा वृत्तियों को भस्म करने की सेवा करो, अपकारी पर भी उपकार करो।

(त्रिमूर्ति दादियों द्वारा मिली हुई अनमोल शिक्षाएं)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

20-09-2026

मधुबन

अपने भाग्य और भाग्यविधाता बाप को याद कर रुहानी मौज का अनुभव करो

(गुल्जार दादी 02-01-02)

हम सबको बाबा के यज्ञ की धरनी पर सेवा करने का चान्स मिला है। यज्ञ सेवा के लिए लोग क्या नहीं करते हैं, गुरुद्वारे में जाओ तो बड़े-बड़े मिनिस्टर भी जूते साफ करते हैं, झाड़ू लगाते, सफाई करते... कारण क्या? गुरु का द्वार समझते हैं, उसमें बहुत भावना रहती है। यह तो सतगुरु का द्वार है। तो यहाँ सेवा का चान्स मिलना भी कितनी बड़ी बात है। भले साधारण रीति से हम कहेंगे चलो हमने अप्लीकेशन की, हमको चान्स मिल गया, ठीक है। मिल तो गया लेकिन चान्स की वैल्यू है? यह तो समझो कल्प-कल्प आपके भाग्य की नूँध हो गई और उसी नूँध अनुसार आपको भाग्य मिल भी गया। लेकिन मिले हुए भाग्य को कहाँ तक आगे बढ़ाते जाते हैं, वह तो हमारे हाथ में है। हम तो सिर्फ कहते हैं कि अगर सिर्फ अपने भाग्य को भी याद करें तो भाग्य के साथ भगवान भी याद आता ही है। भगवान और भाग्य, यही सिर्फ याद रखें तो भी बहुत खुशी और बहुत ही उन्नति होती है।

लेकिन भगवान हमारा बाबा हो गया है, इसलिए कभी-कभी हमने भगवान को भी जैसे साधारण मान लिया है। लेकिन भगवान क्या है? कौन मिला है? किस भाग्य के आधार पर हमको मिला है? यह अगर स्मृति रहे तब तो माया आ ही नहीं सकती। और वास्तव में माया का आह्वान तो हम ही करते हैं। कोई भी शक्ति की, गुण की कमी होती है तो मानों आपने माया को आह्वान किया। आती क्यों है? जैसे डा. क्या कहते हैं? कोई भी बीमारी हो कहेंगे फलानी कमी के कारण यह बीमारी आई है, चाहे विटामिन की कमी हो, चाहे खून की कमी, चाहे कोई भी कमी के कारण आपको बीमारी हुई है। बीज तो यही बताते हैं, तो यहाँ भी बीज क्या है? कोई न कोई शक्ति या गुण की कमी हो जाती है इसलिए हम जैसे खुद ही माया को निमन्त्रण देते हैं या

आह्वान करते हैं। फिर कहते हैं क्या करें? आ जाता है ना, हो जाता है ना, बिन्दी तो लगाते हैं लेकिन हो जाता है – क्यों? बिन्दी के बजाए क्वेश्चन मार्क लग जाता है, आश्चर्य की मात्रा लग जाती है। तो बाबा ने कहा न क्वेश्चन मार्क लगाओ, न आश्चर्य की मात्रा लगाओ। बस। बिन्दी, बिन्दी, बिन्दी। सारा बिन्दी के ऊपर ही आधार है। जैसे 1 से 10 वा 100 कैसे होता है? बिन्दी ही तो लगती है। बिन्दी की तो कमाल है, जैसे उसमें भी बिन्दी की कमाल है। ऐसे कोई भी बात हुई, तो उसे पास्ट इज़ पास्ट कर दो। अगर बिन्दी लगा दी, फुल स्टॉप तो हमारा व्यर्थ संकल्प चलेगा ही नहीं। बिन्दी लग गई फिर व्यर्थ क्यों चलेगा!

आजकल व्यर्थ संकल्प की लीला बहुत भारी है। कोई अर्थ ही नहीं, कोई बुरे संकल्प नहीं लेकिन व्यर्थ बहुत है। बात करते-करते पता नहीं कहाँ का कहाँ चले जाते हैं, किसके लिए बुरा भी नहीं सोचेंगे, कोई ऐसा निगेटिव भी नहीं सोचेंगे लेकिन वेस्ट बहुत जाता है। चाहे समय, चाहे संकल्प, चाहे बोल ऐसे ही व्यर्थ चले जाते हैं। जहाँ दो शब्दों में हमारा काम हो सकता है, वहाँ बहुत लम्बा-चौड़ा स्पष्टीकरण देंगे। अपने मन में भी स्पष्टीकरण करेंगे तो लम्बा-चौड़ा सोचेंगे। दो मिनट की बात 15 मिनट चलती रहेगी। यह भी एक आदत होती है। वेस्ट करने की आदत जैसे कॉमन हो गई है, पता ही नहीं पड़ता है कि वेस्ट हो रहा है। यह तो जब तक अन्तर्मुखी होकर चेक नहीं करेंगे तब तक पता नहीं पड़ेगा। अपने को चेक भी ठीक करें, कई बार चेक करने के लिए बैठेंगे तो अलबेलापन आ जायेगा, कहेंगे यह तो चलता है, ठीक है, ऐसा कौन बना है...।

तो कभी भी अगर आप दिलशिकस्त होते हैं, तो अपनी विशेषताओं को सामने लाओ। और कोई भी विशेषता हमारे

में नहीं है, ठीक है, लेकिन एक विशेषता तो है कि इस जीवन में हमने भगवान को पहचान लिया और उसके बन गये। यह विशेषता तो सभी में है या नहीं है! क्या ऐसे ही पहुँच गये हैं! दुनिया में नौकरी करना बहुत मुश्किल है, यहाँ खाओ पिओ मौज करो, ऐसे तो नहीं आये हो! यहाँ रहे पड़े हैं लाइफ पास कर रहे हैं, ऐसे तो नहीं है? जिस स्थान पर आये हैं, जिस लक्ष्य से आये हैं, वही बार-बार याद रहता है? अगर इसी रीति से आये होंगे कि चलो अपनी जीवन व्यतीत करना है, कमी तो यहाँ है ही नहीं, नुकसान तो है ही नहीं, खाना तो मिलना ही है। दुनिया में लोग कमाई किसलिए करते हैं? कपड़ा, खाना, मकान.. इसी के लिए करते हैं। वह तो यहाँ सब मिल जाता है। तो ऐसी अगर साधारण लाइफ हमारी होगी, लक्ष्य कुछ भी नहीं। कहाँ आये है? क्यों आये हैं? किसके पास आये हैं? अगर वह स्मृति में नहीं है तो जन्म-जन्म हमारी साधारण स्थिति रहेगी। हम सारे कल्प में कभी भी ऊँच जन्म नहीं ले सकेंगे। जब संगम के समय पर हमको ऊँच बनने का चान्स है, उस समय हम साधारण रहे तो और जन्मों में क्या ऊँचे बनेंगे? साधारण ही बनेंगे। अब की अगर साधारण लाइफ है तो सारे कल्प में आप साधारण ही रहेंगे, तो क्या किया? यह लाइफ है क्या? इसलिए ही कहते हैं कि ब्रह्मा ने जब भाग्य बाँटा तो आप कहाँ थे? क्या सोये हुए थे? तो हम सोये हुए तो नहीं हैं? अलबेलापन भी तो एक नींद है ना। वह नींद तो फिर भी थकावट दूर करती है। लेकिन यह अलबेलेपन की नींद हमेशा के लिए हमको नीचे ही रखती है। तो अपने आपको यह जरूर चेक करो कि हम किस लक्ष्य से यहाँ आये हैं? उस लक्ष्य के अनुसार अपने लक्षण को भी चेक करो।

कई कहते हैं कि हमारा लक्ष्य तो बहुत ऊँचा है। अभी लक्ष्य ऊँचा तो सभी रखते हैं। छोटा बच्चा भी कहता है मैं बड़ा होकर इंजीनियर बनूँगा, फिर भले इंजीनियर नहीं बने, हैमर लगाने वाला बने, लेकिन लक्ष्य तो वह भी रखता है, मैं डाक्टर बनूँगा, मैं इंजीनियर बनूँगा, मैं यह यह करूँगा लेकिन लक्षण भी चाहिए ना! लक्ष्य तो है लेकिन लक्षण कहाँ तक हैं? प्राप्ति तो लक्षण से होगी, सिर्फ लक्ष्य से तो नहीं होगी। तो लक्षण हमारे कौन-से हैं? और बाबा से दिल का प्यार है या

जीवन व्यतीत करने का प्यार है? लाइफ पास हो रही है ठीक है, ऐसे तो सारी दुनिया की लाइफ पास हो रही है। हमारी और ही अच्छी हो रही है तो लाइफ पास करने के लिए हम नहीं आये हैं लेकिन लाइफ बनाने के लिए आये हैं। अगर भाग्य बनाने का चान्स मिलते भी हम साधारण रीति से अपना टाइम गँवाते हैं या पास करते हैं तो उसका पश्चाताप हमको ज्यादा होगा। दूसरों को इतना नहीं होगा।

अच्छा, आप बाबा के बने हो, कुछ बना नहीं सकते हो तो बोझ तो नहीं बनो। और बोझ बनने से क्या होगा, समझो साधारण लाइफ है तो हमारे ऊपर बोझ तो चढ़ रहा है ना! इतना कीमती जो अन्न आता है, धन लगता है। जो जिज्ञासू डालते, करते हैं, वो किस लक्ष्य से करते हैं, कितनी ऊँची नज़र से भण्डारी में डालते हैं। अभी तो चलो जमाना बदल गया है लेकिन हमको याद है जब साकार में बाबा थे तो मातायें अपनी हिस्ट्री लिखती थी बाबा हमारे पास तो कोई पैसे नहीं, मैं तो गरीब हूँ, मैं अपना भाग्य कैसे बनाऊंगी, तो क्या करती थी! पति अपने काम पर जाता था तो सिलाई का काम करके, मशीन चलाके या फैक्ट्री में दो घण्टा जाके काम करके पीछे वो पैसे मनीआर्डर करती थी। उन दिनों में 8 आने का भी मनीआर्डर आता था। और लिखती थी बाबा एक ईट आठ आने की मेरी लगा दो। तो यहाँ हम अन्न खा रहे हैं, धन यूज कर रहे हैं, कोई भी काम में, वह इतना महत्व वाला है, इतना अमूल्य है, उसको अगर हम साधारण रीति से अपनी लाइफ पास कर लें, तो क्या रिजल्ट होगी? पश्चाताप तो हमको करना पड़ेगा ना! तो यह जरूर चेक करो कि हमारी लाइफ साधारण तो नहीं है? हमारा आधा दिन तो ऐसे ही बीत गया, काम-काज करते। बाबा कभी याद आ गया.... तो वह हुई साधारण लाइफ। तो इतना भाग्य मिलते हुए अगर हम साधारण लाइफ पास करते हैं तो इसे क्या कहेंगे! हमको इतना अमूल्य जो भाग्य मिला है, उस भाग्य को हम यूज कर रहे हैं? नहीं तो वही गीत हमें सुनना पड़ेगा – रात गँवाई सोके और दिन गँवाया खाके या काम करके... बस। तो ऐसी लाइफ नहीं होनी चाहिए। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

“ऐसे क्वालिटी वाले बनो जो मुरझाये हुए को संजीवनी बूटी देकर मुस्काराना सिखा दो”

(03-01-07)

सदा आत्म-विश्वास बैठ जाये - यह सफलता जो शुरू हुई है वो अन्त तक चलेगी। न मेरे को डाउट उठे, न किसी को डाउट उठे। संगमयुग की अभी थोड़ी-सी घड़ियाँ हैं इसलिए निरन्तर पुरुषार्थ चालू रखना है। बीच-बीच में ब्रेक हो जाने से उसमें फिर और मेहनत बढ़ जाती है और कभी दिलशिकस्त भी हो जाते हैं। पुरुषार्थ में निरन्तर सफलता न मिलने का कारण है - पुरानी कोई आदत है, कोई नेचर है। वो संस्कारों में भरी पड़ी है, उसी को हम यूज कर रहे हैं। पुरानी नेचर व आदत चलाती है।

अच्छी भावना वाला पुरुषार्थ नहीं किया है, वो स्वाभाविक नहीं बना है। तो परिवर्तन नहीं आता। परिवर्तन ऐसा हो जैसे लोहे और सोने में कितना अन्तर है! लोहा कितना भारी है और सोना एक तो सच्चा सोना है, कुछ अलाए मिक्स नहीं है तो वैल्यू में कितना फ़र्क है? सोने में जरा भी अलाए मिक्स न हो तब तो बाबा से गोल्डन कप का अधिकार ले सकेंगे।

दृढ़ संकल्प भी तभी होगा जब इतना अच्छा रियलाइजेशन हो। परिवर्तन आयेगा दृढ़ संकल्प से। तो संकल्प में दृढ़ता तभी आयेगी जब समय की, स्वयं की रियलाइजेशन हो। समय जा रहा है। जैसे जब फुल मून डे होता है तो कितना मज़ा आता है, खींच होती है। ऐसे अपनी सम्पूर्णता को सामने रखो तो बड़ा अच्छा लगता है। तो जैसा लक्ष्य सामने रखते हैं वैसे बन जाते हैं। इजी है। अपना ही फेस चेन्ज हो जाता है। उस घड़ी अपने को लगता ही नहीं है मैं जानकी हूँ या फलानी हूँ...। अपना नाम रूप भूल जाता है। तो अपने पुरुषार्थ की स्पीड अच्छी रखो जो टाइम के पहले हम पहुँचे हुए रहें क्योंकि टाइम चला गया और सम्पूर्णता भी दूर दिखाई पड़ती है तो दौड़ी नहीं लगा सकेंगे, जम्प नहीं लगा सकेंगे। जब किसको भी नहीं देखेंगे तब दौड़ी लगा सकेंगे, कोई पत्थर भी आयेगा तो जम्प लगाके पार कर लेंगे। पत्थर को देख रूकेंगे या उसे तोड़ेंगे तो टाइम वेस्ट हो जायेगा। तुम चल उस पार, तो जो दौड़ना जानता है वो जम्प भी लगा सकता है। जो दौड़ना नहीं जानता है वो बिचारा जम्प कैसे लगायेगा? तो बाबा ने कहा

कारण कभी नहीं देखना। बाबा ने जैसे स्ट्रिकली मना किया है। क्योंकि कारण को देखा माना पत्थर को देखा, काँटे को देखा, फलाने को देखा.. कुछ भी देखा तो बैठ गया। तो ऐसी भूल इस साल में कभी नहीं करना। कोई बड़ी समस्या भी आ जाये तो बाबा सामने आ गया तो समस्या चली गई, समाधान हो गया।

फिर बाबा ने कहा कभी भी कडुवा नहीं बोलना, कडुवा बोला माना अन्दर सन्तुष्ट नहीं है या थका हुआ है या किसी की नेचर अनुसार बिचारा मूँझा हुआ है, तो आवाज़ में फ़र्क पड़ जाता है। जिससे रूहानियत और ईश्वर से जो ईश्वरीय स्नेह पाया हुआ है वो खो लेता है और अभी पा भी नहीं सकता है। तो यह बहुत गहरी बात है इसलिए इस बात को अच्छी तरह से समझो। तो कुछ भी हो जाये, कोई बड़ी बात नहीं है जवाब है नथिंग न्यू बाबा।

झांसी की रानी के समान हम भी मन के घोड़े पर बैठ करके ऐसे जम्प लगा दें, हिम्मत बच्चे हजार गुणा मदद बाप की। तो जिसको हिम्मत बच्चे मदद बाप का अनुभव है वो तो दीवारों को भी ऐसे पार करेगा। सेकेण्ड में अशरीरी हो बाबा के पास ऊपर चले जाना, कोई बड़ी बात नहीं है। तो अभी यह बार-बार रिहर्सल करना है कि पहले शान्तिधाम फिर सुखधाम में अपने मन-बुद्धि को लेके जाओ। इतना ईश्वरीय नॉलेज का अन्दर मन में अमृत पिया हुआ है, जिस कारण मन मजबूत है, जो बाबा ने कहा कन्ट्रोलिंग पॉवर हो तब तो रूलिंग पॉवर आयेगी। अगर मन कमजोर है, कन्ट्रोलिंग पॉवर नहीं है, तो माया देखती है यह तो पहले भी कमजोर है, बाकी भी मैं इसको अपना बना दूँ। तो माया बाबा का बनने नहीं देगी। माया की आकर्षण किसी तरह से भी है तो असुरक्षित महसूस करते हैं, अधीनता हो जाती है फिर आधार चाहिए। अगर किसी की चिंता लगती है कि इसको मुझे आधार देना पड़ेगा तो यह भी खतरा है। यह जो रियलाइजेशन की कमी है, आधार देना या आधार लेना, अधीन बनना या अधीन बनाना, वो कभी ईश्वरीय स्नेह की शक्ति का अनुभव नहीं कर सकता। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“यह सृष्टि चक्र परिवर्तनशील है, इसमें स्वयं का भी परिवर्तन करते चलो”

हम सभी को बाबा कहते लकी स्टार बच्चे। हमारा कल्प पहले का लक ड्रामा में नूँधा हुआ है। हम अपनी तकदीर लेकर आये हैं। हम शिववंशी ब्रह्माकुमार कुमारी फिर विष्णुवंशी बनते हैं। आज बाबा की मुरली में था तुम बच्चे यहाँ ट्रांसफर होने आये हो, परिवर्तन होने आये हो। तो रोज़ अपने से पूछो - मैं परिवर्तन हुआ हूँ! मेरे में परिवर्तन करने की शक्ति है? हम पहले तो पुरानी दुनिया से नई दुनिया में ट्रांसफर हुए। फिर भक्ति से ज्ञान में ट्रांसफर हुए। भक्ति के संस्कार हैं ही देह-अभिमान के। देह-अभिमान के कारण ही दुःखी हो पुकारा क्योंकि रावण ने उतरती कला में लाया। तो अभी हमें पहले अपने उन संस्कारों का परिवर्तन करना है। देह-अभिमान के साथ सब दुर्गुण अवगुण भी परिवर्तन करने हैं। तो हरेक यही चार्ट देखे कि मैं कहाँ तक परिवर्तन हुआ हूँ!

सृष्टि के साथ-साथ जीवन चक्र भी परिवर्तनशील है। अभी मेरी बैटरी फुल होती जा रही है, ऐसा तो नहीं आज फुल नशा चढ़ा हुआ है, कल छोटी मोटी बात हुई तो डाउन हो जाए। फिर कहेंगे हम तो जाते हैं अपने लौकिक में, ऐसा कहना भी सिद्ध करता अलौकिक के बने ही नहीं। मरजीवा बने ही नहीं। उनका नशा जैसेकि बालू के ढेर पर है। जरूर वह खिसकेगा इसलिए उसे सीमेन्ट की दीवार दे दो तो उतरे नहीं। आज मैंने बहुत अच्छा भाषण किया, तीर लग गया। मुझे नशा चढ़ गया। अगर मैं दो चार दिन सेवा नहीं करता तो मेरी खुशी गायब हो जाती! आपस में दो चार दोस्त मिले तो खुश, अगर नहीं मिले तो खुशी गुम। यह सब कौन सी स्थितियाँ हैं? अज्ञानी तो करते लेकिन ब्राह्मणों में भी ऐसी बहुत माया है। वह कहेंगे मेरी ब्राह्मणी अच्छा क्लास कराती, तुम मेरे क्लास में आना। वह कहेंगी क्यों गये! फिर चला परचितन का चक्र। यह भी उल्टा चक्र है। सेवा करने जायेंगे, भावना होगी दूसरे के कल्याण की। अन्दर में चलेगी पार्टीबाजी। पार्टी का करेंगे अकल्याण। बाहरी रूप बहुत अच्छा होता, अन्दर में चलेगी मीठी-मीठी छुरी - कभी आंख से तो कभी मुख से।

सबसे अच्छा गुण है, सदा बाबा की एक लगन में रहकर

इन्डिपिन्डेंट रहो परन्तु इसका यह भाव नहीं कि मैं तो अपना सब कुछ करूँगा, नहीं। आत्माओं पर डिपेन्ड नहीं करो लेकिन बाबा पर डिपेन्ड करो। रहना तुम्हें संगठन में है, ऐसे भी नहीं मेरा तो किसी से कनेक्शन नहीं। निर्मान बनो। निर्मानता के लिए हमें यह दो हाथ मिले हैं। निर्मान बनकर हमें संगठन में चलना है। यह पक्का-पक्का वायदा करके जाओ।

अन्दर में जो कभी-कभी हलचल होती शादी करें या न करें! यह थोड़ी भी हलचल मार डालेगी। अब हलचल को समाप्त करो। मुर्दे के अन्दर हलचल होती है क्या! हम पुरानी दुनिया से मुर्दे हो गये। कहते हैं संस्कार परिवर्तन नहीं होते। मैं कहती हो गये तब तो आये हो। माया ने छोड़ा तब तो बाबा के पास पहुंचे। माया बिचारी ने तुम्हें छुट्टी दी तब तो यहाँ तक पहुंचे हो। बाबा की गोद मिली है इसलिए कोई ऐसे संस्कारों की हलचल उठाओ ही नहीं। नींद नहीं आती, आप बाबा को याद करो। मुरली पढ़ो, यह तो अच्छी बात है, जागती ज्योति बनो। माया से चिढ़ते क्यों हो! चिढ़ते हो तो चिढ़ाती है।

(एक ऋषि की कहानी) उसने कहा स्त्री का मुंह नहीं देखूंगा। एक अप्सरा ने कहा मैं बताती हूँ.... उसने झोपड़ी के पास जाकर खूब ज़ोर से चिल्लाया, ऋषि आवाज सुन बाहर आया उसे तरस पड़ा, उसने उठाया, देखते ही उसकी वृत्ति खराब हो गई। उसने थप्पड़ मारा बोला, तुम तो कहते थे हम स्त्री का मुंह नहीं देखेंगे फिर यह क्या करते हो। देखा तो मरा। तो हम भी मुर्दों को क्यों देखें! अगर आप एक आंख से देखेंगे तो वह चार आंख से देखेंगे। तंग होंगे तो वह तंग करेंगे।

सच्ची दरबार में आये हो - जो भी किचड़ा हो दे दान, देहधारी को हाथ लगाना, माना बिच्छू को हाथ लगाना। हमारी चंचलता बाबा ने समाप्त कर दी। बाबा ने हमें अचल बनाया। हम बाबा के अंगद बच्चे हैं। आपस में भी हाथ न लगाओ, बहुत खबरदार रहना है। अगर किसी को टच करते तो बाबा टच नहीं कर सकता, इसीलिए डोन्ट टच। अच्छा।